http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 7, 3-4

Article ID: 376

नवजात शूकरों में पिगलेट एनीमिया (थम्प्स): कारण लक्षण व निदान

डॉ. अरबिन्द सिंह[1], डॉ. रमाकांत[1], डॉ. अमित कुमार वर्मा[1], डॉ. अजीत कुमार सिंह[1], डॉ. देशदीपक[1], डॉ. विष्णु कुमार राय[1], डॉ. राजपाल दिवाकर[2]

[1]पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौधोगिक विश्वविधालय मोदीपुरम, मेरठ

[2]पशु माइक्रोबायलोजी विभाग आचार्य नरेन्द्र देव कषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविध्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उ0प्र0 224229

पिगलेट एनीमिया मुख्यतः 2 से 4 सप्ताह उम्र के दूध पीने वाले नवजात शूकरों के बच्चों में आयरन की कमी से होने वाला एक महत्वपूर्ण और घातक रोग है। पिगलेट एनीमिया को न्यूट्रीशनल एनीमिया के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा पिगलेट एनीमिया की वजह से शूकर के नवजात बच्चों में फैटी लिवर नमक बीमारी भी हो जाती है। पिगलेट एनीमिया की वजह से हाइपोक्रोमिक माइक्रोसाईंटिक प्रकार की एनीमिया होती है। आयरन खून में पाया जाने बाला हीमोग्लोबिन का एक मुख्य भाग होता है। मादा शूकर के दूध में आयरन की मात्रा बहुत कम होती है जिसकी वजह से शूकर के वच्चों में इसकी पूर्ति दूध से नहीं की जा सकती। जन्म के समय नवजात शूकरों में आयरन की मात्रा लगभग 50 मिली ग्राम के लगभग होती है जबकि सामान्य रूप से बढने के लिए नवजात शूकरों के रक्त में हिमोग्लोबिन के स्तर को बनाये रखने के लिए प्रतिदिन लगभग 7 मिली ग्राम आयरन की आवश्यकता होती है और आयरन की मात्रा मादा शूकर के दूध से पूर्ण नहीं हो पाती है इसलिए नवजात शूकरों में पिगलेट एनीमिया की संभावना बढ़ जाती है।

नवजात शूकरों को कंक्रीट के फर्श की बजाय कच्चे फर्श पर रखना चाहिए क्योंकि यह कुछ मात्रा आयरन की मिट्टी से पाप्त कर लेते हैं जिससे इनको पिग्लेट एनीमिया होने से वचाया जा सकता है। पिगलेट एनीमिया को होने से रोकने के लिए नवजात शूकरों में आयरन के इंजेक्शन या मादा के थनों पर आयरन के पेस्ट का लेप लगाना अति आवश्यक है जिससे दूध पीते समय उनको कुछ आयरन लेप से मिलता रहे। नवजात बच्चों के रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर 9 से 11 ग्राम/डी एल होता है और जव यह लेवल घटकर 4 से 5 ग्राम/डी एल तक पहुंच जाता है तो वो बच्चे पिग्लेट एनीमिया का शिकार हो जाते हैं ।

रोग के कारण:

1. जिन शूकरों और नवजात बच्चों को सर्दियों और शुरुआती बसंत के मौसम के समय कच्चे फर्श और चरागाह में नहीं जाने दिया जाता है और साथ ही साथ पक्के या कंक्रीट के फर्श पर घर के अंदर रखा जाता है उनमें पिगलेट एनीमिया होने की संभावना बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।
2. शूकर के बच्चों के लिवर (यकृत) में आयरन का संचय दूसरे पशुओं के बच्चों की तुलना में बहुत कम मात्रा में होता है जिसकी वजह से शूकर के बच्चे इस रोग के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं।
3. मादा शूकर के दूध में भी आयरन (लोहा) और कॉपर (तांबा) की मात्रा भी बहुत कम पायी जाती है।
4. अंत परजीवी के अधिक संक्रमण होने पर भी आयरन की कमी हो जाती है जिस वजह से एनीमिया होने की संभावना बढ़ जाती है।
5. आयरन के अलावा कॉपर और विटामिन बी–12 की कमी होने की वजह से भी एनीमिया हो जाने की संभावना रहती है।

रोग के लक्षण:

1. पिग्लेट एनीमिया रोग से प्रभावित शूकरों के बच्चों में भूख कम लगती है और साथ ही साथ बच्चों के विकास की गति भी धीमी पड़ जाती है।
2. इस रोग से ग्रसित शूकरों के बच्चों की त्वचा खुरदरी एवं झुर्रीदार हो जाती है।
3. स्लेष्मा झिल्ली का रंग पीला पड़ जाता है और साथ ही साथ कान एवं पूछ लटक जाते हैं।
4. इस रोग से ग्रसित शूकर के बच्चे पिलपिले या कोमल (फ्लेबी) हो जाते हैं।
5. तंदरुस्त और संतुलित तरीके से पोषण पाने वाले शूकरों के बच्चों की मृत्यु भी आयरन की कमी के कारण अचानक हो जाती है।
6. इस रोग से ग्रसित बच्चों में सांस लेने में कठिनाई होती है

जिससे डायफ्राम की मांसपेशियों में स्पाजमोडिक जर्किंग होने लगती है और जर्किंग होने की वजह से पिगलेट एनीमिया को थम्प्स कहा जाता है।

7. इस रोग से ग्रसित सफेद नस्ल के एनीमिक शूकर भूरे रंग के दिखने लगते हैं और साथ ही साथ शूकर के बच्चे थोड़ी सी भाग दौड़ से ही हांफने लगते हैं।
8. इस रोग में बुखार नहीं आता है परंतु कुछ शूकरों के बच्चों में दस्त होने लगते हैं।
9. नवजात बच्चों में एनीमिया जितना ज्यादा होता है उनकी मृत्यु होने की संभावना भी उतनी ही ज्यादा बढ़ होती है।
10. शूकर के बच्चों में आंत्रशोध और निमोनिया भी हो जाती है। निमोनिया के हो जाने से शूकर के बच्चे अन्य संक्रमण से आसानी से संक्रमित हो जाते हैं और इससे उनकी मृत्यु होने की संभावना बढ़ जाती है।

रोग का उपचारः

1. पिग्लेट एनीमिया से बचाने के लिए आयरन के इंजेक्शन नवजात शूकरों को 3 से 5 दिन की उम्र में देना चाहिए न की जन्म के समय।
2. जन्म के समय आयरन का इंजेक्शन लगाने से माँसपेशियों को काफी आघात पहुंचता है।
3. आयरन का इंजेक्शन जन्म के तीन दिन पर 1 मि0ली0 व दसवे दिन 2 मि0ली0 उनके पिछले पैर की माँसपेशियों में या गर्दन की माँसपेशियों में लगाया जाता है।
4. विटामिन बी–12 का इंजेक्शन 5000 माइक्रोग्राम/सप्ताह की दर से एक इंजेक्शन दिया जा सकता है।

रोग का बचावः

1. नवजात शूकरों को जन्म के पहले दो दिन मादा शूकर का दूध कम से कम पॉच बार पिलाना चाहिए जबकि तीसरे व चौथे दिन उन्हे दिन में चार बार वं उसके बाद तीन बार पिलाना चाहिए।
2. नवजात शूकरों को 10 से 14 दिन के बाद दूध की मात्रा को बढ़ाकर दिन में केवल 2 बार कर देना चाहिए।
3. शूकर के दूध में आयरन की मात्रा बहुत कम होती है इसलिए इस कमी को दूर करने के लिए शूकर के बच्चों को मिट्टी को भी चाटने देना चाहिए जिससे इनके शरीर में कुछ मात्रा आयरन (लोह) की मिट्टी से भी प्राप्त हो सके।
4. शूकर के बच्चों को जन्म के बाद आयरन को मुंह के द्वारा या आयरन का इंजेक्शन देना चाहिए जिससे शूकर के नवजात बच्चों में इस रोग को होने से रोका जा सके।
5. जन्म के चार दिनों के अंदर 300 से 400 मिलीग्राम आयरन युक्त गोली या आयरन का घोल को देने से नवजात बच्चों में इस रोग से होने बाली मृत्यु दर को कम किया जा सके।
6. आयरन डेक्सट्रोंन का इंजेक्शन 100 मिलीग्राम/दिन 3 दिन तक माँसपेशियों में देने से काफी लाभ होता है।
7. गर्भवती शूकरी को गर्भधान के अंतिम दिनों में तीन से चार सप्ताह तक दिन में दो बार २ ग्राम आयरन की खुराक दी जा सकती है जिससे जब शूकरी के बच्चे पैदा हों तो उनमें आयरन की कमी ना हो सके।
8. शूकर के बच्चों को जन्म के 12 घंटे के अंदर २०० मिलीग्राम आयरन का एक इंजेक्शन माँसपेशियों में देना चाहिए।
9. 450 ग्राम फैरस सल्फेट, 75 ग्राम कॉपर सल्फेट और 400 ग्राम चीनी को 2 लीटर पानी में घोलकर उसका पेस्ट बना लेना चाहिए और प्रतिदिन शूकरी के थनों पर लेप करना चाहिए जिससे जब शूकर के नवजात बच्चे दूध पिए तो उस समय उनके अंदर इन सब तत्व की मात्रा पहुंच जाए जिससे उनको पिगलेट एनीमिया से बचाया जा सके।
10. शूकर और शूकर के नवजात बच्चों को चरागाह में नियमित रूप से चरने के लिए छोड़ना चाहिए जिससे उनमें आयरन की कमी को दूर किया जा सके और उनको पिग्लेट एनीमिया के होने से बचाया जा सके।